हिमालय से

हे चिर महान्!
यह स्वर्णरश्मि छू श्वेत भाल,
बरसा जाती रंगीन हास;
सेली बनता है इन्द्रधनुष,
परिमल मल मल जाता बतास!
पर रागहीन तू हिमनिधान!

नभ में गर्वित झुकता न शीश
पर अंक लिये है दीन क्षार;
मन गल जाता नत विश्व देख,
तन सह लेता है कुलिश भार!
कितने मृदु कितने कठिन प्राण!

टूटी है तेरी कब समाधि,
झंझा लौटे शत हार-हार;
बह चला दृगों से किन्तु नीर
सुनकर जलते कण की पुकार!
सुख से विरक्त दुःख में समान!

मेरे जीवन का आज मूक,
तेरी छाया से हो मिलाप;
तन तेरी साधकता छू ले,
मन ले करुणा की थाह नाप!
उर में पावस दृग में विहान!

('सान्ध्य गीत' से)

वर्षा सुन्दरी के प्रति

रूपसि तेरा घन-केश-पाश!
श्यामल श्यामल कोमल कोमल,
लहराता सुरभित केश-पाश!
नभ गंगा की रजतधार में,
धो आई क्या इन्हें रात?
कम्पित हैं तेरे सजल अंग,
सिहरा सा तन है सद्यस्नात!

2022.

भीगी अलकों के छोरों से
चूतीं बूँदें कर विविध लास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

सौरभ भीना झीना गीला
लिपटा मृदु अंजन सा दुकूल;
चल अंचल में झर-झर झरते
पथ में जुगनू के स्वर्ण फूल;
दीपक से देता बार-बार
तेरा उज्ज्वल चितवन-विलास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

उच्छ्वसित वक्ष पर चंचल हे
बक-पाँतों का अरविन्द हार,
तेरी निश्वासें छू भू को
बन बन जातीं मलयज बयार;
केकी-रव की नूपुर-ध्वनि सुन
जगती जगती की मूक प्यास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश।

इन स्निग्ध लटों से छा दे तन
पुलकित अंकों में भर विशाल;
झुक सस्मित शीतल चुम्बन से
अंकित कर इसका मृदुल भाल;
दुलरा दे ना, बहला दे ना
यह तेरा शिशु जग है उदास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश।

('नीरजा' से)

अभ्यास प्रश्न

1. **निम्नलिखित पद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य भी स्पष्ट कीजिए–** (2019AF)

(क) नभ में गर्वित झुकता ..... मृदु कितने कठिन प्राण! (2020MB)
(ख) टूटी है तेरी ..... दुःख में समान। (2019AE,20MB)
(ग) मेरे जीवन ..... दृग में विहान! (2016CA)
(घ) रूपसि तेरा ..... घन-केश-पाश!
(ङ) सौरभ भीना ..... घन-केश-पाश!
(च) उच्छ्वसित वक्ष ..... मलयज बयार। (2017AF)
(छ) इन स्निग्ध लटों ..... तेरा घन-केश-पाश।

2. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (2016CE,CF,17AC,AG, 18HA,19AC,20ME, 21GO,GQ,22AA)
3. महादेवी वर्मा का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।